<u>अन्तर्राष्ट्रीय अहिंसा दिवस – 2 अक्टूबर पर</u>

अहिंसा यात्रा प्रवर्तक आचार्य श्री महाप्रज्ञ का संदेश

जयपुर, 1 अक्टूबर।

''संयुक्त राष्ट्र संघ ने 2 अक्टूबर को अंतर्राष्ट्रीय अहिंसा दिवस मनाने की घोषणा कर विश्व की जनता का ध्यान अहिंसा की ओर आकृष्ट किया है। यह एक महत्त्वपूर्ण घटना है। हिंसा व आतंक से संक्रांत जनता के सामने एक नया विकल्प प्रस्तुत किया है। चिंतन और दृष्टि को नई दिशा में ले जाने का यह प्रयत्न प्रशंसनीय है।

महात्मा गांधी के जन्म दिवस को 'अहिंसा दिवस' कहने में बहुत सार्थकता है। उनकी चेतना अहिंसा से इतनी जुड़ गयी थी कि हर प्रवृत्ति में गांधी और अहिंसा एकार्थक बन गए। गांधी की अहिंसा अपने आत्म–शोधन से शुरू होती है और उसका प्रयोग समाज के क्षेत्र में होता है, किन्तु आज गांधी की अहिंसा के मूल को नहीं पकड़ा जा रहा है। आत्म–शोधन और अपने संयम की बात गौण हो गई और समाज को अहिंसा निष्ठ बनाने की बात मुख्य बन गई।

सही दृष्टिकोण के बिना सही आचरण नहीं हो सकता। हिंसा और अहिंसा के विषय में अभी समाज का दृष्टिकोण सही नहीं है। हिंसा और अहिंसा का विचार युद्ध के संदर्भ में किया जा रहा है। विश्व शांति का संबंध भी युद्ध की वर्जना के साथ है। यह ऐसा संकल्प है, जिसकी संभावना क्षीण रहती है और उससे समाज को बहुत कम लाभ मिलता है।

अहिंसा का चिंतन हम व्यक्ति से शुरू करें। अहिंसा एक आचरण है। हर व्यक्ति में हिंसा की चेतना होती है, निमित्त अथवा परिस्थिति पाकर वह उभर जाती है। इसका प्रभाव व्यक्ति पर, परिवार पर और समाज पर होता है।''

– आचार्य महाप्रज्ञ